B.A. III. Honours
Paper II
SOCIOLOGY
M.A. JOINT

R. K. MERTON

प्रकार्यवाद

Robert k. Merton 20 वीं शताब्दी के पहले दशक के एक महत्वपूर्ण अमेरिकी समाजशास्त्री थे। कोलंबिया तथा Harward विश्वविद्यालय से अपनी उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात 1934 ई० में उन्होंने Harward विश्वविद्यालय में ही प्राध्यापक के रूप में कार्य करना आरम्भ कर दिया आधुनिक समाजशास्त्रीयों में Merton का स्थान सब से ऊपर है जिन्होंने सामाजिक विचारधारा तथा समाजशास्त्रीय सिद्धान्त के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है और समाजशास्त्र को अधिक वैज्ञानिक तथा समृद्ध बनाने का प्रयत्न किया। उनके विचारों पर Max Weber, विलियम थामस तथा मानहीम का प्रभाव पड़ा लेकिन व्यवहारिक रूप से वह दुर्खाइम पारसन्स के विचारों से बहुत अधिक प्रभावित थे। उन्होंने प्रकार्यवाद को एक नया रूप प्रदान किया है। अर्थात इसे वेबर, दुर्खीम, और पारसन्स से आगे बढ़ाने का कार्य किया है। उन्होंने सन्दर्भ समूह तथा मध्य सीमा के सिद्धान्त के रूप में समाजशास्त्र के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

Merton ने जिन विचारधाराओं का उल्लेख किया है उनमें प्रकार्यवाद को एक

Scanned with CamScanner

सबसे प्रमुख पक्ष का जो समस्याएँ निकाली गयी थी। नया रूप लेकर समाजशास्त्रीय क्षेत्र में पाया गया मानवशास्त्र के प्रभाव से प्रकार्य का प्रयोग किया। इसके पश्चात Malinowski, R.A.Cliff Brown तथा Talcot Parsons जैसे विद्वानों ने भी प्रकार्यवाद की व्याख्या प्रस्तुत की परन्तु इन सभी विचारधाराओं के आधार पर Merton ने अपने ढंग से तथा अधिक व्यवस्थित रूप से इसे परिभाषित करने की कोशिश की। Merton से पूर्व के विद्वानों ने प्रकार्यवाद के केवल सैद्धान्तिक पक्ष पर ही अधिक बल दिया था। विद्वान बहुत कम थे जिन्होंने प्रकार्यवादी विश्लेषण की चर्चा की है। Merton ने यह विचार दिया कि प्रकार्यवादी विश्लेषण के क्षेत्र में समाजशास्त्रीय चिन्तन अभी ~~पूर्णतया~~ परिपक्व नहीं हो सका है। Merton द्वारा प्रस्तुत प्रकार्यवाद को तीन पक्षों की सहायता से समझा जा सकता है। प्रकार्य का अर्थ, प्रकार्यात्मक विश्लेषण का प्रारूप तथा प्रकार्यवाद की मान्यताएँ।

① प्रकार्य का अर्थ:

- समारोह तथा उत्सव के रूप में
- व्यवसाय के रूप
- गतिविधि के रूप में
- चर (variable) के रूप
- कार्यप्रणाली के रूप में

विभिन्न विद्वानों ने भिन्न भिन्न अर्थों में प्रकार्य शब्द का उपयोग किया है। इसे उपरोक्त प्रकार को समझा जा सकता है।

Scanned with CamScanner

(c) प्रकार्यात्मक विश्लेषण का प्रारूप: प्रकार्यात्मक विश्लेषण को तभी व्यवस्थित बनाया जा सकता है जब इसके एक सुनिश्चित प्रारूप का निर्माण कर लिया जाय। उसके अनुसार इस प्रारूप में जिन अवधारणाओं तथा विशेषताओं का समावेश होता है उन्हें इस प्रकार समझा जा सकता है।

(a) Merton के अनुसार प्रकार्यात्मक विश्लेषण के लिये हम जिन सामाजिक तथ्यों को अध्ययन के लिये उपयोग करते हैं उन्हें विषय कहा जाना चाहिये।

(b) विषयगत प्रेरणायें: जो व्यक्ति एक विशेष प्रेरणा और उद्देश्य के रूप में समाज में एक विशेष भूमिका निभाते हैं प्रकार्यात्मक विश्लेषण के लिये उनका ध्यान कर लेना जरूरी है।

(c) उद्देश्यगत परिणाम: इस सन्दर्भ में Merton ने प्रकार्यों, अकार्यों, घोषित ~~अप्रकट~~ प्रकार्य तथा निहित प्रकार्यों की अवधारणायें भी प्रस्तुत की हैं। और इन अवधारणाओं को प्रस्तुत कर के प्रकार्यात्मक विश्लेषण में आने वाली समस्याओं का निदान प्रस्तुत किया।

(d) प्रकार्यों से सम्बन्धित इकाई: Merton के अनुसार जब विषय का हम प्रकार्यों के आधार पर विश्लेषण करते हैं; वह विषय या इकाई यदि किसी व्यक्ति अथवा उप समूह के लिये अकार्य करे।

(e) प्रकार्यात्मक आवश्यकतायें: Merton के अनुसार प्रकार्यात्मक आवश्यकताओं का विश्लेषण उनकी परिस्थिति के सन्दर्भ में किया जाना चाहिये।

(f) क्रियाविधि की अवधारणा: Merton के अनुसार समाजशास्त्र में ~~प्रकार्यवाद~~ प्रकार्यात्मक विश्लेषण

Scanned with CamScanner

शरीर विज्ञान और मनोविज्ञान में किये जानेवाले अध्ययन के समान है जिसमें शरीर अथवा मस्तिष्क के प्रकार्यों की प्रणाली अथवा क्रिया विधि के स्पष्ट स्वरूपों की चर्चा की जाती है।

(1) प्रकार्यात्मक विकल्प! कोई एक इकाई जो प्रकार्य करती है किसी दूसरी या वैकल्पिक इकाई के द्वारा भी लगभग उसी तरह के प्रकार्य किये जा सकते हैं।

(2) संरचनात्मक संदर्भ : वैकल्पिक प्रकार्यों के फलस्वरूप सामाजिक संरचना में जो विभिन्नता पैदा होती है, वह असीमित नहीं होती।

(i) गत्यात्मकता तथा परिवर्तन! प्रकार्यवादी विश्लेषण किसी भी सामाजिक संरचना को स्थिर अथवा जड मानकर नहीं चलता।

(8) वैधता की समस्या! प्रकार्यात्मक विश्लेषण की एक मुख्य समस्या यह है कि समाजशास्त्रीय अध्ययनों में इस उपागम को वैध माना जा सकता है या नहीं। उन्होंने विचार दिया कि "प्रकार्यात्मक विश्लेषण से हमारा तात्पर्य केवल एक ऐसी पद्धति से है जिसके द्वारा समाजशास्त्रीय तथ्यों की व्याख्या की जाती है। यह उपागम तथ्यों का संकलन करने के क्षेत्र में कोई भूमिका नहीं निभाता।

इन विवेचनाओं से स्पष्ट है कि Merton ने जो प्रकार्यात्मक प्रारूप प्रस्तुत किया, उसमें प्रकार्यात्मक विश्लेषण से सम्बन्धित अनेक समस्याओं तथा अवधारणाओं का समावेश है।

— x —